पढ़ाई रेग्युलर और पंक्चुअल

(सिर्फ बीकेज़ और पीबीकेज़ के लिए)

वी.सी.डी. नं. 2728 प्रातः क्लास 04.10.1967 व्याख्या ता.12.12.2018

प्रातः क्लास चल रहा था- 04.10.1967। बुधवार को आठवें पेज के मध्यांत में बात चल रही थी कि बाबा जो पढ़ाई पढ़ाते हैं वो तो कितना ऊँचा इम्तहान है! ये ऊँचे-ते-ऊँचा इम्तहान पास करके कितनी ऊँची कुर्सी मिलती है! एकदम ऊँचे-ते-ऊँचा! तो टैली किया, पढ़ाई पढ़ने वाले स्टुडेण्ट्स को ध्यान में रखना चाहिए कि जो थ्योरी में भी, प्रैक्टिकल में भी थोड़ी पढ़ाई पढ़ते हैं, तो इतना ऊँचा पद थोड़े ही मिलेगा। तब ही कहते हैं- चढ़े तो चाखे अमृत रस, गिरे तो चकनाचूर; क्योंकि पढ़ाई नहीं पढ़ी। कहाँ तक चकनाचूर? एकदम साधारण प्रजा में गरीब। साधारण प्रजा कौन-सी होती है? एक होती है फर्स्टक्लास प्रजा, सेकिण्ड-क्लास प्रजा, थर्ड-क्लास, फोर्थ-क्लास प्रजा भी होती है। और तो बहुत गरीब होगा। कोई बहुत गरीब परिवार होगा तो उस परिवार में भी बाल-बच्चे तो होंगे ना? तो उस परिवार में सबसे जास्ती गरीब कौन? किसको कहेंगे? गरीबों के परिवार में भी सबसे जास्ती गरीब कौन? अरे भाई! एक अक्षर लिखो। (किसी ने इशारा किया) 'माँ'। क्योंकि माँ जो है परिवार में, सबसे जास्ती गरीब है- न तन की शक्ति; क्योंकि स्त्री चोला है और न मन की शक्ति; क्योंकि जड़त्वमई है और न धन की शक्ति; क्योंकि चाहे घर में बाप हो, चाहे बच्चे हों, बड़े होते हैं कमाने लायक तो सब अपनी मुट्ठी में रखते हैं; कि माँ को देते हैं? नहीं देते। तो तन-मन-धन से सारा जीवन सहन; गरीबों को सहन करना पड़ता है ना; सहन करती है। तो एकदम साधारण प्रजा में गरीब-ते-गरीब। और यहाँ?

यहाँ बाप इतनी ऊँची पढ़ाई पढ़ाते हैं कि अगर कोई बच्चा अच्छे से पढ़ाई पढ़े तो ऊँच-ते-ऊँच एकदम राजाओं का राजा- विश्व का महाराजा, एकदम डबल सिरताज (बने)! डबल सिरताज क्यों कहा? पवित्रता का भी ताज और फिर जितनी पवित्रता उतनी जिम्मेवारी भी उठाए तो पवित्रता का फायदा और जिम्मेवारी न उठाए तो फायदा किस बात का! तो सेवा की जो जिम्मेवारी है, थोड़ों की सेवा या सारे विश्व की? सारे विश्व की सेवा। तो सेवा का ताज भी मिलता है। तो डबल सिरताज है। तो देखो, यहाँ पढ़ाने वाला कितना ऊँच! पढ़ाने वाला यहाँ का सबसे ऊँच हुआ और वहाँ उस दुनिया में, पुरानी दुनिया में पढ़ाने वाले, क्या कहेंगे? अंतिम जन्म में सबसे नीच होंगे कि ऊँच होंगे? क्यों नीच? क्योंकि सारी दुनिया की बुद्धि में बैठाय दिया कि पढ़ाई पढ़ने-लिखने के बाद क्या बनो? नौकर बनो। और बाप क्या बताते हैं? बेहद का सुप्रीम सोल बाप आते हैं तो कहते हैं- अरे, नौकर-चाकर क्यों बनो! अभी बताया ना- नौकर-चाकर आधीन होते हैं कि स्वाधीन होते हैं? आधीन होते हैं। तो किसी के आधीन क्यों बनना है? क्या बनना है- स्वाधीन राजा बनना है या आधीन नौकर-चाकर बनना है? कहते हैं ना- ''पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं''। अच्छे-से विचार करो। ''करि विचार देखौ मन माही''; अच्छे-से विचार करके देख लो, जो आधीन होता है, उसको स्वप्न में भी सुख नहीं होता है; क्योंकि स्वप्न भी तो मन से कनेक्टेड है ना! स्वप्न में इन्द्रियों से तो सुख नहीं लिया जाता है, मन से लिया जाता है; क्योंकि मन अव्यक्त होता है, स्वप्न में भी इधर-उधर घूमता है।

तो बताया- तो इतनी मेहनत चाहिए ना! कौन-सी मेहनत? वो ही पढ़ाई पढ़ने की मेहनत। पढ़ाई पढ़ने की क्या खास मेहनत? उस पढ़ाई में भी मेहनत, इस पढ़ाई में भी मेहनत। जो दुनिया में टीचर लोग/गुरु लोग पढ़ाई पढ़ाते हैं, पढ़ाई तो यहाँ भी है, तो खास किस बात की मेहनत? (किसी ने इशारा किया) अरे! पवित्रता तो तब आएगी जब बाप को पहचानेंगे; कि बिना पहचाने पवित्रता आ जाएगी? नहीं। तो पहचान देने, पहचानने के लिए तो ज्ञान चाहिए ना! ज्ञान की ही पढ़ाई है खास। पढ़ाई क्या है? पढ़ाई माने ज्ञान। तो जो थ्योरी है, ज्ञान है और उसको प्रैक्टिकल में भी करना होता है, तो खास बात क्या है अच्छे स्टुडेंट के लिए, क्या करना है, किस बात में विशेष ध्यान दें? (किसी ने इशारा किया) हाँ,

रेग्युलर। सिर्फ एक बात रेग्युलर नहीं, पंक्चुअल भी होना चाहिए। एक तो रोज़ क्लास अटैण्ड करना माना रेग्युलर और दूसरा- पंक्चुअल। पंक्चुअल माना टाइम से आए। टाइम से नहीं आया, टीचर पहले आ गया, वो (स्टुडेंट) बाद में आ गया, तो टीचर का डिसरिगार्ड हुआ ना! उस दुनिया में तो एक गुणा पाप चढ़ता है और यहाँ? यहाँ तो ऊँच-ते-ऊँच सुप्रीम टीचर है ना! तो पाप भी कैसा चढ़ेगा? सौ गुणा पाप चढ़ता है। तो मेहनत चाहिए।

इस पढ़ाई में समझ चाहिए। क्या समझ चाहिए? हम इतनी गहराई से पढ़ाई पढ़ें कि हम दुनिया में सबसे जास्ती सेवाधारी बनें। कैसे सेवाधारी- सिर्फ तन के, मन के या धन से भी? हाँ, तन से भी सेवाधारी- जब से पढ़ाई पढ़ें और अंत तक, जब तक जीना है तब तक पीना है, अंत तक तन से सेवा करते रहें। शिवबाप ने भी बोला ना- तुम बच्चे अंत तक बाप से वर्सा लेते रहेंगे। ''बच्चे कहते हैं- बाबा, हम जो जिएँगे, आपसे वर्सा लेते रहेंगे।'' (मु.ता.30.5.71 पृ.2 मध्य) आदि सो अंत; आदि में लिया होगा तो अंत में भी लेंगे कि नहीं लेंगे? हाँ, लेते हैं। तो ये समझ चाहिए कि अंत तक पढ़ाई का जो उजूरा है, रिज़ल्ट क्या है? ज़्यादा पढ़े हुए होंगे तो सेवा भी बहुत ऊँची करेंगे। मान लो, कारखाने में हैं, कारखाने में मजदूर बनेंगे, क्लर्क बनेंगे, छोटे-मोटे ऑफिसर बनेंगे, बड़े ऑफिसर बनेंगे या सबसे ऊँचा ऑफिसर- मैनेजर बनेंगे और मैनेजरों में भी सबसे ऊँचा एम.डी. बनेंगे; क्या बनेंगे? ज़्यादा होशियार कौन होता है? एम.डी. बहुत होशियार होता है। तो कारखाने में ज़्यादा टाइम देता है या अपने घर में मस्ती मारने में ज़्यादा टाइम देता है? कहाँ कौन ज़्यादा टाइम देता है? (किसी ने इशारा किया) हाँ, तो ऐसे ही है, इसमें समझ चाहिए कि ज्ञान जितना हम गहराई से ग्रहण करेंगे तो हम उतना ज़्यादा सेवाधारी बनेंगे और ज़्यादा सेवाधारी बनेंगे; ज़्यादा सेवा करने की प्रैक्टिस यहाँ करेंगे कि नहीं? तो फिर रिज़ल्ट क्या होगा? हम बहुत ऊँच-ते-ऊँच, जब इम्तहान होगा तो ऊँचा इम्तहान पास करेंगे और ऊँचा नंबर लेंगे। आज की दुनिया में भी जो एकदम; कौन-से स्टुडेंट? थर्ड-क्लास, सेकिण्ड-क्लास, फर्स्टक्लास या उससे भी ऊँचा कोई? (किसी ने इशारा किया) हाँ, पास विद् ऑनर। उसमें भी नंबर होते हैं- एक होता है पूरी यूनिवर्सिटी को(में) टॉपमोस्ट एग्ज़ाम में, एक होता है अपने कॉलेज में टॉपमोस्ट। यूनिवर्सिटी तो एक होती है और कॉलेज तो ढेर होते हैं। तो बताया कि इतनी ऊँची पढ़ाई, ऊँचे-ते-ऊँचा पढ़ाने वाला, तो बच्चों को तो बहुत अच्छी तरह से समझ चाहिए कि ऐसी पढ़ाई पढ़ें जो हम सबसे जास्ती सेवाधारी बन करके दिखाएँ।

तो सेवाधारी बनने के लिए क्या खास/विशेष बात करनी पड़े? (किसी ने इशारा किया) पढ़ाई। पढ़ाई तो; लेकिन प्रैक्टिकल में क्या? (किसी ने इशारा किया) हाँ, वो तो बताया, प्रैक्टिकल में ज़्यादा-से-ज़्यादा सेवा करें (किसी ने इशारा किया) हाँ, सहन करना। तो सहनशक्ति सबसे बड़ा गुण है। किसका गुण है- राक्षसों का, मनुष्यों का, ऋषि-मुनियों का, देवताओं का? क्या बनना है? इस सृष्टि रूपी रंगमंच पर सृष्टि के आधे हिस्से का सुख भोगने के लिए और फिर जो बचेगा उसमें भी जास्ती सुख भोगने के लिए, माना जन्म-जन्मांतर का सुख भोगने के लिए अभी पढ़ाई पढ़ते समय कौन-सी शक्ति धारण करनी है? सहनशक्ति, सर्व गुणों का राजा।

तो बताया कि ये समझ चाहिए बच्चों को, बहुत अच्छी तरह से समझना है। उसमें भी बाप बार-2 समझाते रहते हैं। जिन बातों को समझना है, उसमें क्या खास बात बार-2 समझाते रहते हैं? कि काम करते, चलते-फिरते याद की यात्रा में रहो; क्योंकि याद किसको करना है? याद जिसको करना है वो बड़ी प्यारी वस्तु है। कौन है भई प्यारी वस्तु? जल्दी, एक अक्षर में बताओ! (किसी ने इशारा किया) हाँ, ऐसे नहीं कि शिव कह दिया तो काम हो गया बड़ी प्यारी वस्तु। अरे, साकार होगा तब प्यार टिकेगा या सिर्फ निराकार शिव ज्योतिबिन्दु होगा तो टिकेगा? तो वो शिव निराकार इस सृष्टि पर आ करके जो ऊँच-ते-ऊँच साकार पार्टधारी, हीरो पार्टधारी है, उसमें प्रवेश करता है। वो कौन है, सुप्रीम सोल तो जानता है; क्योंकि वो जन्म-मरण के चक्र में नहीं आता है; इसलिए जानता है। और हम आत्माएँ, जो इस सृष्टि रूपी रंगमंच पर पार्ट बजाने वाली हैं; किसलिए पार्ट बजाती हैं? इसलिए पार्ट बजाती हैं कि हम यहाँ इस सृष्टि में रहेंगे तो सुख में रहेंगे।

ज़्यादा-से-ज़्यादा सृष्टि रूपी रंगमंच पर रहेंगे तो सुख में रहेंगे या थोड़ी देर के लिए सृष्टि पर आएँगे तो सुख में रहेंगे? हाँ, लम्बे-से-लम्बे टाइम तक हम इस सृष्टि पर रहेंगे, पार्ट बजाएँगे तो हम बहुत सुख भोगेंगे। तो भोगी हुए कि योगी हुए? भोगी।

इस सृष्टि रूपी रंगमंच पर सबसे जास्ती भोगी कौन-से प्राणी होते हैं? (किसी ने इशारा किया) नर! नर माना मनुष्य, जिनको मन होता है, वो ज़्यादा भोग भोगते हैं! अच्छा, ये बात है! फौरन बिगाड़ दिया। बड़ी चालाक माता है! बताओ। (किसी ने इशारा किया) मनुष्य ज़्यादा सुख भोगते हैं, अच्छा! देवता ज़्यादा सुख भोगते हैं। उनको क्या कहा जाता है? देव या देवी। तो ये जो देव हैं/देवी हैं, तुम्हें बनना है या देवी-देवताओं का भी बाप बनना है? भगवान बनना है कि देवी-देवता बनना है? तुम्हें क्या बनना है? बताओ! क्योंकि देवी-देवताओं को जो बनाने वाला बाप है ना, अच्छा सुप्रीम सोल कह दो या सुप्रीम सोल इस सृष्टि पर आ करके आप समान बनाता है, उसे कह दो। ज़्यादा सुख कौन भोगता है- सुप्रीम सोल बाप भोगता है, जिसे आप समान बनाता है वो भोगता है या जो बच्चे हैं वो भोगते हैं? (किसी ने इशारा किया) हाँ, तन का भी, धन का भी, मन का भी ज़्यादा सुख। तीनों चाहिए कि एक चाहिए? तीनों चाहिए ना! तो अगर तीनों चाहिए तो क्या करना पड़े? तीनों चाहिए तो अभी पहले यहाँ ऊँच-ते-ऊँच बाप की जो पढ़ाई है, उसमें उस बाप को पहचानना पड़े। कौन-से बाप को? जो सिर्फ निराकार नहीं है, निराकार भी है और साकार भी है। कि सिर्फ निराकार है? (किसी ने इशारा किया) अच्छा, शिवबाप की जब पढ़ाई पढ़ता है, निराकार नहीं बनेगा, निराकार बनने का लक्ष्य नहीं लेगा कि बाप समान बनना है, तो फिर बाप समान कैसे बनेगा? बताओ! अरे भई, एवरलास्टिंग लक्ष्य बाप बनने का है, बापों का बाप बनने का है या बच्चे ज़्यादा सुखी होते हैं घर में? मान लो, वसुधैव कुटुम्बकम् बनना है, तो बाप की क्या आस होती है- बच्चे ज़्यादा सुखी रहें; कि मैं ज़्यादा सुखी रहूँ? यही आस होती है ना! तो क्या बनना है- बच्चे बनना है या बाप बनना है? (किसी ने इशारा किया) बच्चे बनना है, ठीक है! तो बच्चे बनना है, तो बाप को पहचानना है या नहीं? कैसे पहचानेंगे? पढ़ाई में रेग्युलर-पंक्चुअल नहीं होंगे और लम्बे समय के रेग्युलर-पंक्चुअल नहीं होंगे और तीसरी बात- लम्बे समय के बाप के सन्मुख पढ़ाई पढ़ने वाले नहीं होंगे, ये भी तो बात है! सन्मुख में ज़्यादा फायदा या दूर रह करके पढ़ते हैं, उसमें ज़्यादा फायदा? सन्मुख में ज़्यादा फायदा।

तो बताया कि तुमको भगवान पढ़ाते हैं, बाबा पढ़ाते हैं। ऐसे नहीं, सिर्फ ऊँचे-ते-ऊँचा बाप, शिवबाप पढ़ाते हैं। कौन पढ़ाते हैं? वो शिवबाप भी जब साकार तन में प्रवेश करके और-2 सम्बंध भी बनाए लेता है, तो उसमें बड़ा संबंध, प्यारा संबंध बाबा का संबंध है। और संबंधों से तो उतनी प्राप्ति, उतना वर्सा नहीं मिलता; लेकिन बाबा से तो पक्का है कि वर्सा ज़रूर मिलता है। कैसा भी बच्चा हो, बाप का बच्चा लुच्चा-लफंगा-गंदा होगा तो बाप नाराज़ होके वर्सा नहीं देगा; और बाबा? बाबा तो समझदार है ना! (किसी ने इशारा किया) हाँ, वो तो ज़्यादा समझदार है, बहुत अनुभवी है। जानता है कि ये तो कल्प-2 मेरे बच्चे बनने वाले हैं, इन बच्चों को देना तो ज़रूर है। बच्चा बने हैं तो मैं बापों का बाप बना हूँ, तो बाप का काम क्या है? देना है। तो वो बाबा हमको पढ़ाते हैं। अरे! बाबा पढ़ाएगा ही ज़रूर; क्योंकि विश्व का मालिक बनाएगा ना! पहले क्या करेगा? पढ़ाएगा ना! और क्या करेगा? कौन-सा पद देगा? पढ़ाएगा और पद कौन-सा देगा? पद भी; वर्सा तो देगा, वो तो सब बच्चों को वर्सा मिलता है। (किसी ने इशारा किया) हाँ! कौन-सा वर्सा देगा? विश्व की बादशाही का वर्सा देगा। कौन देगा? बाबा देगा। हद का बाबा नहीं, बेहद का बाबा- शिवबाबा। अकेला शिव नहीं, अकेला बाबा नहीं; क्योंकि अकेला बाबा कहेंगे तो दुनिया में ढेर सारे बाबाएँ हैं और शिवबाबा कहेंगे तो पक्का है कि भले शिव इस सृष्टि पर आता है, ब्रह्मा-नामधारियों में प्रवेश करता है, तो भी सभी ब्रह्मा-नामधारियों के द्वारा शिवबाबा है या एक मुकर्रर रथ के द्वारा शिवबाबा? कौन-से शिवबाबा की पढ़ाई? एक मुकर्रर रथ से जो पढ़ाता है, आदि से अंत तक भी पढ़ाता है, मध्य में भी पढ़ाता है। तो वो बाबा विश्व की बादशाही का पद देता है।

जब बाबा कहेंगे तो सिर्फ साकार शरीरधारी ही याद आए या वो निराकार भी याद आए जो निराकारी आत्माओं का बाप है? दोनों याद आएँ। अगर ये याद आया कि हम साकार से ही पढ़ रहे हैं, जैसे बाबा बच्चों से पूछते थे- किसकी गोद में आए हो? तो बच्चे कहते- हम ब्रह्मा बाबा की गोद में आए हैं। धत् उतर! फेल। ऐसे कहते थे ना? (किसी ने इशारा किया) हाँ, गोद में बैठने के काबिल नहीं। तो कब खुश होते थे? जब बच्चा कहता था- हम शिवबाबा की गोद में आए हैं। तो शिव भी याद रहे, शिव माने बिंदी। शिवबाबा कहें ना! शिव नाम किसका है? सिर्फ आत्मा है तो शिव नाम है और साकार शरीर में मुकर्रर प्रवेश करते हैं तो कहेंगे- शिवबाबा। सिर्फ निराकार पद देगा, कौन-सा बाबा पद देगा? निराकार को तो बाप कहा जाता है, वो तो बाबा है ही नहीं, साकार बनता है तो बाबा है। तो कौन-सा पद देते हैं? विश्व की बादशाही का पद। नहीं तो निराकार बाप क्या वर्सा देते हैं? (किसी ने इशारा किया) शांति का वर्सा दे देते हैं! वाह! मुक्ति का वर्सा देते हैं निराकार बाप? (किसी ने इशारा किया) हाँ, ज्ञान का वर्सा देते हैं। निराकार है ना! और ज्ञान भी कैसा है? निराकार। निराकार बाप निराकारी वर्सा देते हैं।

निराकारी बाप से निराकारी वर्सा मिलेगा, बाप आते हैं बच्चों को बहुत सुख देने के लिए; तो कोई भी बाप होगा, उसको कुटिया होगी तो बच्चों को कुटिया दे जाएगा और बड़ा महल होगा, महल बनाया हो तो महल दे जाएगा। तो सुप्रीम सोल बाप का घर कौन-सा है? क्या देता है? (किसी ने इशारा किया) हाँ, परमधाम। उसे परमधाम कहो, ब्रह्मलोक कहो, शांतिधाम कहो; कि सुखधाम कहेंगे? नहीं। तो शिवबाप का तो वो ही घर है- शांतिधाम। उसको याद करेंगे तो ज़्यादा-से-ज़्यादा कहेगा कि अच्छा, हम घर बनाकर रखा हुआ है, हम उस घर में रहते हैं, ज़्यादा लम्बे टाइम तक हम रहते हैं, तुम भी वहीं रहो। पसंद है? (किसी ने इशारा किया) नहीं पसंद है! क्यों भाई, शांति पसंद नहीं? अरे! अभी ताबड़तोड़ विनाश होगा, चारों तरफ दुनिया में मारा-मारी चलेगी, भगद्दड़ मचेगी; कि मकान में बैठे-2 मस्ती मारेंगे? नहीं। तो फिर क्या चाहिए- सुख चाहिए कि शांति चाहिए? एक अक्षर लिख दो। (किसी ने इशारा किया) शांति चाहिए। अच्छा, माताजी बड़ी चालाक! कहतीं- शांति नहीं चाहिए; जीवनभर रहते शांति चाहिए। तो जीवन भी रहे और शांति भी रहे। नहीं तो ज़्यादा आत्माएँ, जब ताबड़तोड़ विनाश होता है, चारों तरफ शहर-2 में ऐटमबम्ब फटने लगते हैं, फटते हैं ना? तो क्या चाहते हैं? सुख चाहते हैं? वो आत्माएँ इब्राहीम-बुद्ध-क्राइस्ट के बच्चे, वो सुख चाहते हैं कि शांति चाहते हैं? शांति चाहते हैं। तो उनको शांतिधाम में शांति मिल जाती है, ज़्यादा लम्बे टाइम तक बाप के घर पड़े रहो। और तुमको सिर्फ शांति चाहिए? शांति के साथ सुख भी चाहिए। तो वो तो जीवन में रहते-ही-रहते मिलेगा। जीवित भी रहें और शांत भी रहें और सुखी भी रहें, तो बाप कहते हैं- वो तो मेरे जो स्पेशल बच्चे हैं ना, उन्हीं को मिलती है। कौन-से बच्चे? 100 परसेण्ट पूरी-2 सुख और शांति तो उन्हीं बच्चों को मिलती है, जो मैं बीज-रूप हूँ तो मेरी बीज-रूप स्टेज को जो बच्चे प्राप्त होते हैं।

तो ऐसी पढ़ाई पढ़नी; कितनी ऊँची? कि ये जो देह विस्तार है ना; आत्मा का विस्तार रूप क्या है? देह/शरीर; ये भूल जाए। ऐसे नहीं कि भूलने के चक्कर में तुम तलवार लो और गर्दन उड़ा दो- न रहेगा बांस और न बजेगी बाँसुरी। ऐसे भी नहीं। कैसे? कि हम, जैसी पढ़ाई पढ़ी होगी, बीज-रूप आत्माओं के बीच में बहुत अच्छी पढ़ाई पढ़ी होगी, तो ज़्यादा-से-ज़्यादा बहुत ऊँचा टॉपमोस्ट (हों); क्योंकि बाबा आते हैं तो यूनिवर्सिटी खोलते हैं ना! कौन-सी यूनिवर्सिटी? प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय खोलते हैं या एवरलास्टिंग ऊँचे-ते-ऊँची और भी कोई यूनिवर्सिटी खोलते हैं? (किसी ने इशारा किया) हाँ, प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय, उसमें तो बेसिक पढ़ाई पढ़ायी जाती है। उसमें कम पढ़ाई पढ़ने वाले जो स्टुडेंट हैं और वो नीची कुरियों के ब्राह्मण बनते हैं, वो पढ़ाई पढ़ते हैं। एकदम हाइएस्ट पढ़ाई पढ़ने वाले तो उनको कहा जाता है जो कम-से-कम फर्स्टक्लास/सेकिण्ड-क्लास हों, पढ़ाई पढ़ने में ज़्यादा इंटरेस्टेड हों- तो वो है 'आध्यात्मिक ईश्वरीय विश्वविद्यालय'। तो वो पढ़ाई जो पढ़ेंगे और फिर अच्छे-ते-अच्छे रेग्युलर और

पंक्चुअल स्टुडेंट होकर पढ़ेंगे, तो बाप को रहम आएगा कि नहीं? कैसा भी डल-से-डल स्टुडेंट हो; लेकिन श्रद्धा-भावना इतनी बैठी हुई है कि हम किससे पढ़ाई पढ़ रहे हैं? ऊँच-ते-ऊँच सुप्रीम टीचर से पढ़ाई पढ़ रहे। तो उसके ऊपर टीचर को रहम आएगा कि नहीं? (किसी ने इशारा किया) हाँ! और कोई ऐसे स्टुडेंट होते हैं, बुद्धि के बड़े तीखे होते हैं, क्लास में देर से भी आएँगे, टीचर का डिसरिगार्ड भी करेंगे और रोज़-2 आएँगे भी नहीं; लेकिन बुद्धि के तीखे हैं, बड़ी जल्दी सारी बात कैच कर लेते हैं। अब बाप तो जानते हैं कि ये जो ज़्यादा बुद्धि के तीखे हैं, ये इस सृष्टि रूपी रंगमंच पर देर से आते हैं या शुरुआत से आते हैं? जो इस सृष्टि रूपी रंगमंच पर देर से आते हैं, शान्तिधाम में बाप के घर में पड़े रहते हैं। कोई बच्चे होते हैं ना, छोटे होते हैं कि बड़े? ज़्यादातर छोटे होते हैं, छोटी बुद्धि वाले। तो वो बस, अरे! हमारे मम्मी-पप्पा जब तक मौजूद हैं तब तक मस्ती मारने दो, फिर बाद में तो हमें अपनी कमाई करनी पड़ेगी! तो वो मस्ती मारते रहते हैं, बाप को उतना सहयोग नहीं देते, उतना अकल नहीं है। तो बताया कि वो न रेग्युलर रहते हैं, न पंक्चुअल रहते हैं; इसलिए (कि) बुद्धि का अहंकार बहुत है और बुद्धि का अहंकार बहुत होने के कारण फिर जो वो प्राप्ति है, वो नहीं कर सकते। क्यों नहीं कर सकते? क्योंकि बाप का प्यार, बाप का दिल किस बच्चे के ऊपर जाएगा? जो रेग्युलर और पंक्चुअल होकर पढ़ेगा उसके ऊपर दिल जाएगा कि इसमें भावना बहुत है और जो रेग्युलर-पंक्चुअल नहीं होगा, वो कभी आता है, कभी नहीं आता है और आता है तो देर से आता है, टीचर का डिसरिगार्ड करता है; टीचर को डिसरिगार्ड अच्छा लगेगा? अच्छा तो नहीं लगेगा। अच्छा टीचर होगा तो अन्दर-2 सहन तो कर लेगा, बोलेगा भी नहीं, कुछ डाँटेगा भी नहीं; जैसे-शिवबाप। स्टुडेंट लेट आते कि नहीं? पंक्चुअल आते हैं? पंक्चुअल नहीं आते। रेग्युलर आते हैं? नहीं आते हैं। तो भी अन्दर से जान तो जाता है कि ये डिसरिगार्ड कर रहे हैं; लेकिन फिर भी कुछ दंड दे देता है? कहता है- खड़े हो जाओ बैंच के ऊपर? नहीं कहता है। तो देखो, वो शिवबाबा, ये हमेशा ध्यान रखो- शंकर बाबा नहीं कहा जाता; शिवबाबा। तो शिवबाबा जब आते हैं, कितना बच्चों का ध्यान रखते हैं! कौन-से बच्चों का ध्यान रखेंगे, जिनमें ज़्यादा श्रद्धा-भावना होगी उनका ध्यान रखेंगे या जिनमें श्रद्धा-भावना नहीं है, उनका ज़्यादा ध्यान रखेंगे? श्रद्धा-भावना वालों का ज़्यादा ध्यान रखते हैं।

तो बताया कि विश्व का मालिक बनाता है और क्या करता है? कहेंगे- ऊँच-ते-ऊँच पद देता है, डबल सिरताज बनाता है। विश्व का मालिक तो बाद में बनाएगा; पहले क्या बनाएगा? विश्व के मालिक बन जाएँगे, फिर तो कुछ सेवा करने की दरकार रहेगी नहीं। वो सारी दुनिया खुद ही सेवा करेगी कि सेवा करने की दरकार रहेगी? नहीं रहेगी। बताओ- कौन-सा पद देगा? डबल सिरताज! डबल सिरताज माने एक- पवित्रता का ताज और दूसरा- जिम्मेवारी का ताज। ऐसे नहीं कि बस, अब तो कुर्सी मिल गई, अब तो पढ़ाई पूरी हो गई। नहीं! जिम्मेवारी का ताज। कौन-सी जिम्मेवारी? ईश्वरीय सेवा- चाहे तन की हो, चाहे धन की हो, चाहे मन की हो। ज़्यादा होशियार होगा तो तीनों की करेगा कि एक की करेगा? तीनों की करेगा। तो डबल सिरताज बनाते हैं। तो वो तो बोलता है ना- मैं तुमको राजाओं का राजा बनाता हूँ। 'वो तो' क्यों कह दिया? कौन-सी आत्मा ने बोला? (किसी ने इशारा किया) हाँ, शिव ने बोला। ये नहीं कहा कि मैं तो बोलता हूँ ना! क्या बोलता हूँ? तुमको राजाओं का राजा बनाऊँगा। तो अकेला शिव ज्योतिबिंदु जो आत्मा है, जो ज्ञान की पढ़ाई पढ़ाता है, वो राजाओं का राजा/विश्व का बादशाह बनाता है? अरे! वो खुद राजा नहीं बनता। इस सृष्टि पर आता है, साकार में आता है तो कोई राजाई चलाता है? हाँ, राजाई नहीं चलाता है। राजाई तो वो चलाते हैं, जिनमें अंश मात्र कुछ-न-कुछ रजोगुण ज़रूर हों, राजाई का गुण। ये तीन गुण होते हैं ना- सत-रज-तम। तो देखो, राजाओं में रजोगुण होता है कि नहीं, राजाई करने का गुण? होता है ना? हाँ! सतयुग में, स्वर्ग में ही होता है कि नरक में भी होता है? अरे! एक अक्षर में जल्दी से नहीं बताते। (किसी ने इशारा किया) नरक में ही होता है, स्वर्ग में नहीं होता? स्वर्ग में जो देवी-देवताएँ होते हैं, वहाँ उनका जो शरीर होता है, उस शरीर में रजोगुण का अंश नहीं होता है? होता है तब ही तो नीचे उतरते हैं। हाँ, और

तमोगुण का अंश नहीं होता है? हाँ, रजोगुण और तमोगुण की प्रधानता नहीं होती है; प्रधानता सत्वगुण की होती है। तो इसलिए राजाएँ तो कहे जाते हैं कि नहीं? हाँ, सतयुग के आदि से ही राजाएँ। अच्छा, वैकुण्ठ में? वैकुण्ठ में विष्णु जी महाराज को/लक्ष्मी-नारायण के कम्बाइण्ड रूप को बड़े-ते-बड़ा/ऊँचे-ते-ऊँचा सर्वोत्तम राजा कहेंगे या नहीं? कहेंगे। तो डबल सिरताज हुए कि नहीं? विष्णु जी महाराज को जिम्मेवारी का कोई ताज रहा? क्या ताज रहा? क्या करेंगे? (किसी ने इशारा किया) पालना करेंगे! कैसे पालना करेंगे? लड्डू खा लो, पेड़ा खा लो, कपड़ा पहन लो, मकान ले लो- ये पालना करेंगे? क्या पालना करेंगे? अरे! माँ होती है, घर में पालना करती है ना और बाप की छत्रछाया के नीचे पालना करती है; क्योंकि बाप कमाई कमाके लाता है तो माँ बच्चों की पालना करती है। तन से भी करती है, धन से भी करती है, करती है कि नहीं? रोटी, कपड़ा और मकान, तीनों मुहैया करती है कि नहीं? हाँ! (किसी ने इशारा किया) विनाश के बीच स्वर्ग की बादशाही देता हूँ, वो तो ठीक है! देता तो हूँ; लेकिन बताया कि वो विष्णु जी महाराज के ऊपर वो डबल सिरताज जो बताया, वो कौन-सा है जिम्मेवारी का ताज? उनके ऊपर क्या जिम्मेवारी है? अरे! खास जिम्मेवारी क्या है? (किसी ने इशारा किया) देवताओं की सुरक्षा। ओहो! वैकुण्ठ में कोई आक्रमण होगा क्या? (किसी ने इशारा किया) श्रेष्ठ आत्माओं की पालना। कैसे पालना? किस चीज़ से पालना? कौन-सी शक्ति से पालना करेगी? (किसी ने इशारा किया) पवित्रता! माना काहे की पवित्रता? तन की पवित्रता; धन की तो बात छोड़ दो; क्योंकि धन तो वहाँ गंदा होगा ही नहीं- न ज्ञान-धन गंदा होगा, न स्थूल धन की कोई बात ही है। तो तन की पवित्रता या मन की पवित्रता? (किसी ने इशारा किया) तन की पवित्रता! मन की पवित्रता! हाँ, क्योंकि तन जो है, होगा तो विश्व के बादशाह के पास; लेकिन वो प्रिफरेन्स ज़्यादा किसको देगा? कौन-सी सेवा को ज़्यादा महत्व देगा? तन की सेवा को ज़्यादा महत्व देगा- भाग-दौड़, बोल-चाल, देखना, करना, सुनना, हाथों से कमाई करना या मन को ज़्यादा प्रिफरेन्स देगा? (किसी ने इशारा किया) हाँ, मन को देगा। सेवा की जिम्मेवारी मन से क्या होती है? सेवा की जिम्मेवारी मन से होती है वायब्रेशन बनाता है। मन कौन-सी सेवा करता है? मन का वायब्रेशन बनाना। जिस वायब्रेशन से, कहते हैं- ऋषियों-मुनियों के आश्रमों में शेर-बकरी भी एक घाट पर पानी पीते थे। तो ऐसा वायब्रेशन बनाना कि इस सृष्टि में वो आत्मा जहाँ भी पहुँचेगी, अकाल पड़ रहा होगा, तो अकाल खत्म; ऐटम बम्बों के आक्रमण हो रहे होंगे तो आक्रमण खत्म और बीमारियाँ फैली होंगी, जैसे प्लेग की बीमारी फैलती है, चूहे बहुत बढ़ जाते हैं, तो पहुँचते ही क्या होगा? खत्म। माना ऐसा वातावरण क्रियेट कर देगा कि कोई भी प्रकार का दुख महसूस नहीं होगा। शांति भी महसूस हो, सुख भी महसूस हो। तो वो जैनियों के ग्रंथों में ये बात लिखी हुई है कि "जितने भी तीर्थंकर हुए हैं, उनमें पहला ऊँच-ते-ऊँच/श्रेष्ठ-ते-श्रेष्ठ तीर्थंकर जिसे कहते हैं ऋषभ देव, वो जहाँ जाते थे, वहाँ अकाल, महामारी, अतिवृष्टि और जो बीमारी है, वो सब पहुँचते ही खत्म हो जाती थीं।" तो ऐसा डबल सिरताज बनाता हूँ। कौन-सी जिम्मेवारी का ताज धारण करता है? अरे! वो मन पवित्र होगा तब ही तो वो जिम्मेवारी मिलेगी; धारण कर सकेगा? कि सिर्फ पार्वती अम्मा का तन पवित्र होगा; पार्वती अम्मा क्या ज़्यादा पुरुषार्थ करती है? तन पवित्र बनाती है। जन्म-जन्मांतर का या एक जन्म का? जन्म-जन्मांतर का। तो सिर्फ तन की पवित्रता से उतनी पावरफुल आत्मा नहीं कही जाएगी। काहे से बनेगी? (किसी ने इशारा किया) हाँ, मन की पवित्रता भी हो।

तो मन की पवित्रता एकाग्रता से आती है। एकाग्रता माने एक को पहचाने और पहचान करके उस एक को याद करे। क्या एक बिन्दी की याद? नहीं, एक बिन्दी की याद, वो तो परिपक्व याद होगी ही नहीं; क्योंकि जिस बिन्दी को हम कहते हैं- सुप्रीम सोल/ज्ञान-सूर्य, वो बिंदु तो इतना सूक्ष्म है कि चिन्तन करने से भी चिन्तन नहीं होता और अगर किसी आत्मा का होता भी है, हीरो पार्टधारी का, जो बाप समान बनती हो, तो सिर्फ तब तक होता है जब तक बाप इस सृष्टि पर सन्मुख है और वो गया, बस नीचे उतरना शुरू। तो देखो, ये मन की जो पवित्रता है, वो स्थायी हो सकती है। मन पावरफुल बना लिया, एकाग्र हो गया तो तन की इन्द्रियाँ- चाहे ज्ञानेन्द्रियाँ हों, चाहे कर्मेन्द्रियाँ हों, ऑटोमैटिक कंट्रोल

होंगी। तो बताया- ऐसा डबल सिरताज बनाता हूँ। तो वो बोलता है; मैं नहीं बोलता हूँ। मैं क्या बोलता हूँ? मैं ऐसा डबल सिरताज बनाता हूँ, कैसा? जिसमें मन एकाग्र हो जाए। काहे से? ऐसा ज्ञान धारण करेंगे, ऐसी पढ़ाई पढ़ेंगे गहराई तक, ऊँच-ते-ऊँच पढ़ाई पढ़ेंगे तो तुम वो वायब्रेशन को कंट्रोल करने वाले मन, जो इन्द्रियों का मुखिया सबसे पावरफुल है, उसको कंट्रोल कर लेंगे और एक जन्म के लिए नहीं, सदाकाल के लिए; क्योंकि सुप्रीम सोल को तो मन है ही नहीं और उसको कंट्रोल करने की दरकार भी नहीं। जिनको मन होता है, उन्हीं को कहेंगे दिल होता है। दिल और मन एक ही बात। तो बताया, वो बोलता है- मैं तुमको राजाओं का राजा बनाऊँ। यानी शिव की आत्मा ने बोला- मैं नहीं बनाता हूँ राजाओं का राजा; वो राजाओं का राजा बनाता है। कौन बनाता है? वो राजाओं का राजा बनाता है, जो मेरी पढ़ाई को रेग्युलर और पंक्चुअल हो करके पढ़ता है।

तो मूल बात क्या हुई? अगर ये लक्ष्य लिया है कि हमको विश्व का बादशाह बनना है, भले नम्बरवार ही होंगे, चलो, लक्ष्य तो अव्वल नंबर का लेना है ना! तो हमें भी बनना है, तो क्या करना है, पहला काम क्या करना है? (किसी ने इशारा किया) हाँ, पढ़ाई रेग्युलर-पंक्चुअल हो करके पढ़नी है। जब से अपन को पहचाना कि मैं ज्योतिबिंदु आत्मा हूँ और मेरा बाप ज्योतिबिंदु आत्मा है, ये तो पहचाना, ये तो बेसिक पढ़ाई हुई; लेकिन ये तो नहीं जाना कि वो ऊँच-ते-ऊँच पढ़ाई पढ़ाने वाला, सिर्फ बेसिक नॉलेज नहीं, एडवांस ज्ञान पढ़ाने वाला, हाइएस्ट स्टेज की पढ़ाई अगर हम पढ़ना चाहते हैं तो वो पढ़ाने वाला कौन है? क्योंकि आत्मा का ज्ञान और आत्माओं का बाप जो होता है, वो तो ज्ञान बेसिक नॉलेज में मिल जाता है; लेकिन उसकी गहराई नहीं मिलती कि इस सृष्टि रूपी रंगमंच पर जो मैं आत्मा हूँ ना, आत्मा रूपी रिकॉर्ड कहो, बैटरी कहो, उसमें जन्म-जन्मांतर की कितनी पावर भरी हुई है, किस जन्म में क्या पार्ट बजाने वाली आत्मा हूँ; इतनी गहरी नॉलेज लेने के लिए फिर ऊँची पढ़ाई पढ़नी पढ़े या सिर्फ इतने जानने से ही आत्मा (का) काम चल जाएगा? ''हम है आत्मा, तुम हो आत्मा, आपस में भाई-2''- गीत गाते रहो, हो गई नॉलेज? हाँ, या तो बेसिक नॉलेज मिल गई- भई, ये सृष्टि जो है, ये चार युगों में चक्कर लगाती है और लगाती ही रहती है- सतयुग-त्रेता-द्वापर-कलियुग-संगमयुग। फिर रटते रहो- सतयुग-त्रेता-द्वापर-कलियुग-संगमयुग, तो ये पढ़ाई पूरी हो गई? नहीं। फिर ऊँच-ते-ऊँच पढ़ाई पढ़नी है, गहराई से पढ़नी है, बाल में से खाल, खाल में से बाल निकलती चली जाए। विस्तार से समझना है तो क्या करना पड़े? हाँ, बाप से डायरैक्ट कनेक्शन जोड़ना पड़े और डायरैक्ट कनेक्शन भी दो तरह का होता है- एक होता है, देह से डायरैक्ट सामने तो बैठे हैं, आँखें फाड़-2 कर देखते भी हैं; लेकिन मन-बुद्धि? मन बाहर की दुनिया में भाग रहा है। तो क्या कहेंगे? बाहर की दुनिया में भाग रहा है या कोई देहधारी में बुद्धि लगी हुई है, मन लगा हुआ है, बार-2 उधर ही भाग जाता है। भाग जाता है कि नहीं? किसी से लगाव लग जाता है तो बुद्धि कहाँ भागती है, मन कहाँ भागता है? उधर ही चला जाता है। गुरु-वुरू/टीचर-पिचर एक तरफ धरे रहते हैं, वहीं भाग जाता है। तो ऐसे ही होता है।

तो बताया कि पहली बात है- उस सुप्रीम टीचर के प्रैक्टिकल स्वरूप, जिसे कहते हैं साकार शरीर के द्वारा, वो शिव सुप्रीम सोल रेग्युलर कहाँ पढ़ाई पढ़ाता है; क्योंकि मुकर्रर रथ में आता है ना; कि ऊँची पढ़ाई पढ़ाने के लिए टेम्परारी रथ में आता है? हाँ, मुकर्रर रथ में। तो जब तक उस साकार स्वरूप को नहीं पहचानेंगे, जिसके लिए गीता में कहा है, दो ही चीज़ों का ज्ञान है- एक क्षेत्र, एक क्षेत्रज्ञ। क्षेत्र माने वो आधार/शरीर और क्षेत्रज्ञ माने वो जो शरीर है, उस शरीर को पहचानने वाला। तो ऊँचे-ते-ऊँचा शरीरधारी या नंबरवार या नीचा शरीरधारी? ऊँचे-ते-ऊँचा शरीरधारी जो क्षेत्र है, कहा जाता है- 'अर्जुन'। जैसे अर्जुन की तरफ, गीता-ज्ञान दिया तो इशारा किया ना- ''इदं शरीरं कौन्तेय क्षेत्रमित्यभिधीयते।'' (गीता 13/1) इदम् माने ये है, वहाँ नहीं है, मेरे बाजू में नहीं बैठा है। जिस पर मैं बैठा हूँ, जिस शरीर रूपी रथ पर, वो शरीर रूपी रथ 'क्षेत्र' है और ऊँचे-ते-ऊँचा/बड़े-ते-बड़ा क्षेत्र। क्षेत्र माने स्थल, युद्ध स्थल कह दो, धर्म-युद्ध भूमि कह दो। तो वो ऊँच-ते-ऊँच है। उसको अगर नहीं पहचाना तो ज्ञान भी पूरा नहीं और फिर ज्ञान की प्राप्ति भी पूरी नहीं; क्योंकि ज्ञान से ही

सुख होता है। किसका ज्ञान? निराकार का? नहीं। निराकार जिस साकार में, शरीर रूपी रथ में, अर्जुन के रथ में, आदम के शरीर में प्रवेश करके पार्ट बजाता है, उसको पक्का-2 पहचान लेना कि ये मेरा कौन-सा बाप है? जन्म-जन्मांतर का बाप है। कैसे? जन्म-जन्मांतर के बाप तो अलग-2 होते हैं, 84 जन्मों के 84 बाप होते हैं। ये कैसे 84 जन्म का 84 बाप? अरे! वो 84 जो बाप होते हैं, उनमें भी जो आत्मा काम करती है; क्या काम करती है? पावर/ऊर्जा। शरीर में क्या पावर काम करती है? आत्मा। वो आत्मा भी कहाँ से आती है? परम+आत्मा से आती है। तो वो गीता में कहा है कि ऐसे तो दुनिया में दो ही तरह की आत्माएँ हैं, एक वो आत्मा जो अक्षर है, कभी क्षरित, नीचे नहीं गिरती, पतित नहीं होती। कौन? शिव। और बाकी सब आत्माएँ थोड़ी या ज़्यादा क्षरित ज़रूर होती हैं। बहुत-में-बहुत, बहुत-में-बहुत कम क्षरित होगी तो उसको क्या कहेंगे? त्रिनेत्री शंकर हीरो पार्टधारी। कितनी भी देह-अभिमान की धूल जम जाए तो भी हीरा थोड़ी-बहुत चमक/रोशनी मारेगा। तो ऐसे ही बताया कि तुमको क्या करना है, उस ऊँच-ते-ऊँच आत्मा को भी पक्का-2 साकार रूप में पहचानना है इस सृष्टि रूपी रंगमंच पर, जिसमें सुप्रीम सोल मुकर्रर पार्ट बजाता है। आदि में भी पार्ट बजाया था ओम् मण्डली में, मध्य में भी पार्ट बजाता है, प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय में पार्ट बजाता है और फिर जब वो बेसिक नॉलेज का स्कूल छोड़ देता है; प्रजापिता ब्रह्माकुमारी स्कूल छोड़ता है कि नहीं? या छुड़वा दिया जाता है- रे! कान पकड़ के निकलो बाहर, हटो! तो पढ़ाई छोड़ देता है? नहीं। रेग्युलर पढ़ाई पढ़ता है। कैसे पढ़ाई पढ़ेगा? सन्मुख वाली पढ़ाई पढ़ेगा या दूर वाली पढ़ाई पढ़ेगा? (किसी ने इशारा किया) सन्मुख! कैसे पढ़ेगा? (किसी ने इशारा किया) ए.आई.वि.वि. में पढ़ेगा! अच्छा! कौन-से स्थान से निकाला गया होगा? माउण्ट आबू से निकाला गया होगा। अच्छा! वहाँ से उसने पढ़ाई पढ़ना शुरू की? (किसी ने इशारा किया) किसने- ये नहीं पूछा, स्थान पूछा। कहाँ से निकाला गया? (किसी ने इशारा किया) अरे! पहले-2 कहाँ से कान पकड़के निकाला होगा- अहमदाबाद से निकाला होगा या आबू से निकाला होगा? (किसी ने इशारा किया) कम्पिल से निकाला गया! माउण्ट आबू से निकाला गया। तो बताया कि भले निकाला जाए, निकाल दिया ना! चलो, अहमदाबाद में सही, मान लिया, आबू से सही, मान लिया; लेकिन सन्मुख पढ़ाई कैसे पढ़े? अरे! सन्मुख पढ़ाई पढ़ने में गैप पड़ जाएगी कि नहीं? (किसी ने इशारा किया) हाँ, उसके अन्दर ही तो है। कौन? वो जान जाता है ना! बाप के प्रत्यक्षता वर्ष में ही जान जाता है ना! या उससे पहले भी जान जाता है? उससे पहले भी थोड़ा-2 जान जाता है। जान जाता है तब तो कहा अव्यक्त वाणी में- ''घबराओ मत! बैक-बोन बापदादा सामना करने के लिए किसी भी व्यक्त तन द्वारा समय पर प्रत्यक्ष हो ही जावेंगे और अब भी हो रहे हैं।'' (अ.वा.16.1.75 पृ.2 आदि) तो ये तो सन् 1973-74 में बोला होगा, उस समय तो बाप का प्रत्यक्षता वर्ष घोषित नहीं हुआ। फिर?

माना वो आत्मा ने पढ़ाई पढ़ी ना! कौन-सी पढ़ाई? वो ही ब्रह्मा जो पढ़ाई पढ़ाते हैं- वेदों की पढ़ाई। ब्रह्मा के मुख से कौन-सी वाणी निकलती है? वेदवाक्य/वेदवाणी निकलती है। तो जो वेदवाणी निकली, जिसे मुरलियाँ कहा जाता है, उसमें पढ़ा हुआ है ना, पहले से पढ़ा हुआ है- ''इन ल०ना० का जन्म कब हुआ। आज से 10 वर्ष कम 5000 वर्ष हुआ।'' (सन् 66 की वाणी है) (मु.ता.4.3.70 पृ.3 मध्य में रिवाइज़ हुई) तो बुद्धि में आ जाता है कि नहीं कि कब प्रत्यक्षता होगी लक्ष्मी-नारायण की? सन् 1976 में होगी। ये भी पक्का समझ में आ जाता है कि जो आदि लक्ष्मी-नारायण हैं, नर से डायरैक्ट नारायण बनने वाला, प्रिंस के रूप में जन्म लेकर नहीं; डायरैक्ट नारायण बनने वाला, वो तो ज़रूर इस सृष्टि पर कोई आत्मा है। तो एकदम जन्म हो जाता है कि प्रत्यक्षता रूपी जन्म लेने में भी टाइम लगता है? टाइम लगता है ना! तो निकाला तो पहले गया होगा। जब निकाला गया तो उस समय बुद्धि में बात आ गई कि नहीं? आ गई ना! और जब, वो गवर्मेंट होती है ना! तो ईश्वरीय गवर्मेंट (में) आदेश निकला मुरली में- ये-2 व्यक्ति है, ये-2 नाम का है, इससे कनेक्शन नहीं करना है, इसकी बुद्धि खराब हो गई है। [''सूचना:- अहमदाबाद का वीरेंद्र कुमार अपनी मनमत पर चलने से सेंटर्स पर उपद्रव मचाता है। जिसके कारण उनको कोई भी सेंटर पर आने न देना है, न ही उनके साथ कोई पत्र-व्यवहार

रखना है।'' (मु.ता. 10.7.75 पृष्ठ.3 अंत)] तो वो है, वो तो बाद में निकलता है ना! कब निकलता है? वो तब निकलता है, 1975 में नहीं निकलता है, वो तब निकलता है जब ऑर्डर निकालने वाले जो प्रैक्टिकल स्वरूप हैं देहधारी गुरु लोग, उनको ये पता चलता है कि ये आत्मा घर-2 में जाके सेवा कर रही है। कहाँ कर रही है? दिल्ली में। आवाज़ निकलती है ना! बाबा ने कहा- जब तुम्हारी प्रत्यक्षता की आवाज़ निकलेगी तो कहाँ से निकलेगी? दिल्ली से आवाज़ निकलेगी। [''देहली से जो आवाज़ निकलेगी तो छोटे-2 स्थानों में आपे ही पहुँचेगी।'' (अ.वा.28.12.79 पृ.160 अंत) ''देहली से आवाज़ चारों ओर सहज फैलता है।'' (अ.वा.18.1.97 पृ.23 मध्य)] दूसरी क्या बात बताई? एक भी संन्यास आश्रम पूरा कन्वर्ट हो गया तो तुम बच्चों की प्रत्यक्षता हो जावेगी, नाम-बाला हो जावेगा। [''ऐसा कोई आश्रम सारे-का-सारा पलट पड़े, फिर तो सभी की आँख खुल जाए। बहुत समझते भी हैं- जबकि यह महाभारत लड़ाई है, तो ज़रूर भगवान भी होना चाहिए।'' (मु.ता.4.4.75 पृ.2 आदि)] तो वो भी निकलता है, पूरा-का-पूरा बेहद का, क्या कहें! दिल्ली में संन्यासियों का/सफेद कपड़े वालों का पूरा आश्रम पलट जाता है तो हेड-ऑफिस में गद्दीनशीन गुरुओं के पास आवाज़ पहुँच जाती है और फौरन टन-टनाटन ऑर्डर निकाल देते हैं। [''आवश्यक सूचना:- आजकल देहली में एक वीरेन्द्र, जो पहले अहमदाबाद में था, अब देहली में है, वो आत्मा अपना मनमत का पार्ट बजा रही है, बाहर से तो ज्ञान की गुह्यता में जाने का रूप कहती, हरेक के घर जाकर कोर्स कराती है, मुरली का आधार लेकर डेटवाइज़ प्वॉइंट्स निकाल सुनाती; लेकिन अर्थ अपना मनमत का निकालती है और यह भी कहती है कि आजकल वीरेन्द्र द्वारा बापदादा का पार्ट चलना है। एक मुरली मुआफिक भी साइक्लोस्टाइल कर कहाँ-2 भेजी है। जिसमें ऊपर से 'शिव का डमरु बाजे, अगम-निगम के भेद खोले' लिखा हुआ है, नीचे नाम-एड्रेस रवीश की है। ....कहाँ-2 वो अपना नाम भी बदली कर सुनाता है। उनके साथ देहली के कुछ भाई-बहिनें भी कहाँ-2 जाकर यही प्रोपोगण्डा करते हैं; इसलिए उन्हों से ध्यान रखना। हियर नो ईविल का पाठ पक्का रखना है।'' (मु.ता. 5.1.77 पृष्ठ.3 अंत)]

तो बताया- ये किसने बोला- मैं तुम्हें राजाओं का राजा बनाता हूँ? वो बोलता है; मैं नहीं बोलता। मैं माना शिव की आत्मा नहीं बोलती है। मैं तुम्हें क्या बनाता हूँ? अरे! एक अक्षर लिख दो। (किसी ने इशारा किया) विश्व का मालिक बनाता हूँ! वो तो हुआ ही राजाओं का राजा! (किसी ने इशारा किया) आत्मा बनाता हूँ। वो तो बेसिक नॉलेज में बना दिया। अरे! अभी तो मुरली में बोला- डबल सिरताज बनाता हूँ। एक तो कौन-सा ताज? पवित्रता का ताजधारी और दूसरा? कौन-सी पवित्रता? हाँ, बड़े-ते-बड़ी पवित्रता है मन की पवित्रता। मन एकाग्र होने लगे। मन एकाग्र नहीं है तो पवित्रता नहीं। इसलिए कहते हैं- मन जब एकाग्र होता है तो सूक्ष्म बनेगा या बड़ा रूप बनेगा, भैंस बुद्धि बनेगा? नहीं, सूक्ष्म बनता है। मनन-चिंतन-मंथन ही हर समय होता रहेगा। और देह/मिट्टी को याद करने से फिर ईश्वरीय ज्ञान का विस्तार नहीं हो सकता। तो वो बोलता है कि मैं राजाओं का राजा बनाता हूँ और शिव बोलते हैं- डबल सिरताज बनाता हूँ। डबल सिरताज माने एक तो पवित्रता का ताजधारी और पवित्रता माने सबसे अच्छी, सबसे जास्ती पवित्र चीज़ क्या होती है जो बोला- पवित्रता का ताजधारी? (किसी ने इशारा किया) मन पवित्र होता है? मन तो किसी का पवित्र नहीं होता है इस दुनिया में। (किसी ने इशारा किया) ज्ञान, हाँ। एकदम एक अक्षर में लिखके बताओ। बताया, क्या बताया? ज्ञान। ज्ञान माने जानकारी। किसकी जानकारी? उसकी जानकारी जिसमें शिव सुप्रीम सोल निराकार मुकर्रर रूप से प्रवेश करके ज्ञान का भंडार देता है, जिसको कहते हैं- ''न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रं इह विद्यते।'' (गीता 4/38) कौन-सा ज्ञान? देहधारी धर्मगुरुओं का ज्ञान नहीं। तो फिर कह दो कि आशाराम बापू जी का ज्ञान, मुरारी, हंसा जी महाराज का ज्ञान। नहीं! जो सुप्रीम सोल शिव है, जो सदा ही कल्याणकारी रहता है, कभी अकल्याणकारी बनता ही नहीं, वो जो ज्ञान देता है, उस ज्ञान को कहेंगे- पवित्र चीज़/गीता-ज्ञान। क्योंकि वो गीता-ज्ञान कागज़ में लिख करके, पुस्तक में लिख करके नहीं देता है कि व्यास जी महाराज ने पूरी गीता लिख दी या उनके पहले कोई गुरु हुए, उन्होंने लिख दी। नहीं! जितने भी धर्मपिताएँ हैं, सब क्या

करते हैं, ओरली सुनाते हैं। ऐसे ही, ये देवी-देवता बनाने वाला जो भगवान सुप्रीम गॉडफादर, हैविनली गॉडफादर है, वो भी ओरली ज्ञान सुनाता है और ओरली भी दो प्रकार का है- एक है टेम्परररी रथ, वो तो चार हैं ब्रह्मा के मुख, उनके द्वारा सुनाता है और एक है मुकर्रर रथ। कौन-सा मुकर्रर रथ? जो ब्रह्मा का मुख ऊपर दिखाया जाता है। जो मुखधारी आत्मा है, वो संगमयुग में भी कहाँ मुख़ातिब होके रहती है? नीचे की दुनिया में नहीं, हाँ, जब से बाप की पहचान होती है तब से ले करके अंत तक, जब तक संगमयुग या पुरुषोत्तम संगमयुग रहे, वो उसी ओर मुख़ातिब रहती है, ऊर्ध्वमुखी। (किसी ने इशारा किया) हाँ, तो वो मुकर्रर रथधारी जो मुख है, उसको बताया कि वो तो राजाओं का राजा बनाता है और मैं तुम्हें वो चीज़ देता हूँ जो संसार की सबसे पवित्र चीज़ है- ईश्वर। मुझे ईश्वर कहें कि परमेश्वर कहें? क्या कहें- ईश्वर कहें कि परमेश्वर कहें, महेश्वर कहें? (किसी ने इशारा किया) महा ईश्वर कहें! अच्छा! (किसी ने इशारा किया) परमेश्वर कहें! अच्छा! शिव मेरी बिंदी का नाम है। मैं बिन्दी आत्मा अपन को शिव ही कहूँगी। तो उसे परमेश्वर कहेंगे? (किसी ने इशारा किया) हाँ, परमेश्वर/महा ईश्वर कहा ही तब जाता है; जैसे- महा ब्राह्मण, महानारायण, महालक्ष्मी; जब दो मिल करके एक हों। तो सुप्रीम सोल शिव भी जब तक साकार मुकर्रर रथ में न आए तब तक महेश्वर थोड़े ही कहा जाएगा! महा ईश्वर कहो, परमेश्वर कहो, कब कहा जाएगा? जब दो मिलके एक हों। तो वो शिव तो ईश्वर है। आत्माओं का बाप क्या है? ईश्वर। 'ईश' माने शासक, 'वर' माने श्रेष्ठ। श्रेष्ठ शासन करने वाला है; लेकिन महेश्वर नहीं। 'महा' शब्द तब लगाया जाता है जब दो के साथ(का) मेल होता है; इसलिए भारत में खास परम्परा पड़ी हुई है कि अकेले टब्बूचंद हैं तब तक सम्पूर्ण नहीं है, कितनी भी ताकत हो। भले भगवान आता हो, कह जाता हो- उन कुंवारों में इतनी ताकत है कि जो चाहे सो कर सकते हैं। [''कुमार जो चाहे वह कर सकते हैं।'' (अ.वा.21.2.83 पृ.80 अंत)] नई दुनिया बनाना चाहे तो नई दुनिया बनाय सकते हैं; पुरानी दुनिया को भस्म करना चाहे तो भस्म कर सकते हैं। लेकिन सम्पूर्ण कहे जाएँगे? सम्पूर्ण नहीं कहे जाएँगे। सम्पूर्ण तब कहे जाए जब दो मिल करके एक हों। निराकार आत्मा साकार शरीर से न मिले तो सम्पूर्ण कही जाएगी? नहीं। ऐसे ही जो इस सृष्टि रूपी रंगमंच पर पार्ट बजाने वाली आत्माएँ हैं, उनमें जो सदा निराकार शिव है और इस सृष्टि रूपी रंगमंच पर जो सदा साकार शंकर/आदम है, तो दोनों मिलें तब क्या होता है? महेश्वर कहा जाता है।

तो ये परम्परा कहाँ से पड़ी कि जब तक कुमार-कुमारी हैं तब तक पूरे नहीं हैं, सम्पूर्ण नहीं हैं? जब तक शादी नहीं हुई है तब तक सम्पूर्ण कुमार नहीं कहा जा सकता कि कुमार ने पूर्णता प्राप्त कर ली! क्यों? मन क्या करेगा? कुमारों का मन तो भागता ही रहेगा। सच्ची बात है ना! हाँ, इस दुनिया के किसी विद्वान ने भी बता दिया कि कुमार को एक पलड़े में रखो और जो शादीशुदा अधरकुमार हैं, उनको दूसरे पलड़े में रखो, दोनों के जो संकल्प हैं, किसके ज़्यादा भारी होंगे? (किसी ने इशारा किया) हाँ, एक कुमार के जितने संकल्प चलेंगे, जितनी चिंता होगी, वो चिंता जो शादीशुदा है ना, उसको नहीं सताएगी। शादीशुदा व्यक्ति की जो गृहस्थी में हज़ारों चिंताएँ लग जाती हैं- ये करना है, वो करना, वो करना है, उन चिंताओं के मुकाबले कुमार की एक चिंता भारी पड़ जाएगी। तो क्या कहें? मन कंट्रोल हुआ? नहीं हुआ। तो अधूरे हुए या सम्पूर्ण हुए? अधूरे कहेंगे। तो बताया- क्या बनना है, सम्पूर्ण बनना है या अधूरा बनना है? सम्पूर्ण बनना है।

सिर्फ निराकार को याद करने से नहीं चलेगा, निराकार के साथ क्या चाहिए? साकार को भी पहचानना है और साकार को पहचान देने के लिए ही शिव सुप्रीम सोल इस सृष्टि पर आता है। राजाई देने के लिए नहीं आता है, रजोगुणी बनाने के लिए नहीं आता है; क्या बनाने के लिए आता है? आता है, राजाई ही देता है; लेकिन देता है ज्ञान, जिस ज्ञान से(को) जो धारण करेंगे तो राजा बनेंगे। माने राजयोग की पढ़ाई पढ़ाता है। राजाई देता है या राजाई का ज्ञान देता है? ज्ञान देता है। तो बताया कि मैं डबल सिरताज बनाता हूँ। माना एक तो पवित्रता का ताज। कौन-सी ऊँचे-ते-ऊँची पवित्रता? अरे! जिस पवित्रता से दुनिया के सारे काम होते हैं। (किसी ने इशारा किया) एक की याद! एक की याद ज्ञान के बिगर हो जाएगी? बता दिया- (किसी ने इशारा किया) हाँ, वायब्रेशन भी कब बनेगा? जब एक की पूरी पहचान होगी तब ही बनेगा

ना! और सम्पूर्ण एक की पहचान होगी कि अधूरे एक की? शिव सुप्रीम भी अधूरा और जिसमें प्रवेश करता है वो भी... (किसी ने इशारा किया) हाँ, ज्ञान। ये हुई दुनिया की सबसे ऊँच-ते-ऊँच चीज़। कहते हैं ना- पवित्रता सबसे ऊँची चीज़ है; लेकिन सिर्फ तन की पवित्रता नहीं, मन की पवित्रता भी और वो तब ही आती है जब मन के संकल्पों को एकाग्र किया जाएगा और एकाग्र करने के लिए उस एक बाप को प्रैक्टिकल में पहचाना जाए। तो बताया कि बाप आते हैं तो बताते हैं- मैं डबल सिरताज बनाता हूँ और मनुष्य-सृष्टि का बाप जब सम्पन्न बनता है, पहले खुद सम्पन्न बने कि दूसरों को बनाना शुरू कर देगा? हाँ, खुद सम्पन्न बने, तो फिर वो राजाई की शिफ्त सौ परसेण्ट आ जाती है। वो खुद बनता है, तो फिर दूसरों को बनाता है। क्या करेगा? राजाओं का राजा बनाता है। तो पवित्र भी बनाते हैं। कैसा पवित्र? सिर्फ तन से पवित्र, पक्का कर लो, तुम्हारी अम्मा की तरह सिर्फ तन से पवित्र कि मन से भी पवित्र? (किसी ने इशारा किया) हाँ, तन से भी पवित्र और मन से भी पवित्र; क्योंकि तन तो बाद में होता है, पहले क्या होता है? तन पहले कि मन पहले? अम्मा के गर्भ में बच्चा आता है तो तन पहले या मन-बुद्धि रूपी आत्मा पहले? तन पहले आता है; लेकिन तन पहले आता है- ये तो जान लिया, गहराई से सोचो- तन भी किस आधार पर बनता है? (किसी ने इशारा किया) हाँ, वो जो माँ के पेट में तन तैयार होता है, उसमें वो मन होता है? (किसी ने इशारा किया) अच्छा! हाँ, 3-4 महीने तक अम्मा के पेट में तन तो होता है; लेकिन जो चैतन्य मन-बुद्धि वाली आत्मा है वो नहीं, वो कहीं दूर है। दो-चार, चार-पाँच महीने पहले से ही वो मन के वायब्रेशन जो हैं, उसके आधार पर वो बीज पड़ा, जिस बीज से वो बच्चा पैदा होता है। कोई बाप ने बीज डाला होगा ना! तो जिस बाप ने भी बीज डाला, उसके अन्दर जो संकल्प पैदा हुआ बीज डालने का, उसका कनेक्शन कहाँ से जुड़ा हुआ है? उस आत्मा से जुड़ा हुआ है, जिसको दो-चार, चार-पाँच महीने के बाद शरीर छोड़ना है और शरीर तब छोड़ना है जब वो बीज परिपक्व हाथ-पाँव वाला पक्का बच्चा निर्जीव पिण्ड बन जाए, फिर उसमें प्रवेश करे। ऐसे ही है। बाप भी पवित्र बनाते हैं, तो पवित्रता सिर्फ तन से नहीं; तन की पवित्रता नहीं, मन की पवित्रता। तन तो जड़ है और मन-बुद्धि तो चैतन्य है।

तो पवित्र भी बनाते हैं और हिस्ट्री-जॉग्राफी स्कूल में पढ़ाते भी हैं। इस सृष्टि की हिस्ट्री भी पढ़ाएँगे कि नहीं? कितनी पुरानी हिस्ट्री है भई? कहेंगे, बताएँगे- अरे, ये सृष्टि 5000 वर्ष पुरानी है। तो बस, वो ही बात सुनाए देंगे, जो ऋषि-मुनि-महर्षि, संन्यासियों ने सुनाई? नहीं, वो तो उन्होंने स्वार्थ पूर्ति करने के लिए बताय दी कि सृष्टि लाखों वर्ष है। क्यों? क्योंकि 500/1000 साल थोड़ी बताएँगे, तो फिर लोग पूछने लगेंगे- अच्छा, इतने 500/1000 सालों में कौन-कौन-से जन्म हुए, कितने जन्म हुए, सब बताओ। वो हक्के-बक्के रह जाएँगे, कुछ नहीं बता पाएँगे। तो बताया कि हिस्ट्री-जॉग्राफी पढ़ाई जाती है। तो सुप्रीम सोल बाप/हैविनली गॉडफादर/बेहद का पिता ये सृष्टि की हिस्ट्री भी बताते हैं कि ये 5000 साल पुरानी हिस्ट्री है और ये हर 5000 साल के बाद हूबहू रिपीट होती है और जॉग्राफी भी बताते हैं- सतयुग में इस सृष्टि में जो धरणी है, कितनी बड़ी होगी और सागर कितना बड़ा होगा। बताते हैं कि नहीं? पहाड़ कितने होंगे, नदियाँ कितनी होंगी। सारी बुद्धि में बात आती है ना! तो ये सारा विस्तार के लिए बाप सिर्फ बेसिक नॉलेज देते हैं कि तुम ज्योतिबिंदु आत्मा हो, मैं तुम्हारा ज्योतिबिंदु बाप हूँ, इतने से काम चलता है या विस्तार बताते हैं? विस्तार। कब होता है विस्तार? जब दो मिल करके एक हों। शिवबाप और जिस मुकर्रर रथ में प्रवेश करते हैं, दोनों का कम्बिनेशन, तो उनको कहा जाता है- असली बापदादा। कौन बाप? आत्माओं का बाप सुप्रीम सोल। और दादा? जन्म-मरण के चक्र में आने वाली आत्माओं के बीच में जो हीरो पार्टधारी आत्मा है, जिसमें शिव ने प्रवेश किया, वो हमारा बड़ा भाई हो गया। बड़ा भाई बाप समान होता है कि नहीं? परम्परा कहाँ से पड़ी? (किसी ने इशारा किया) हाँ, संगमयुग में सुप्रीम सोल बाप आते हैं तो ये परम्परा डालते हैं कि इस सृष्टि रूपी रंगमंच पर जो बाप का बड़ा बच्चा प्रत्यक्षता रूपी जन्म लेता है, सारे संसार को पता चलता है- तो वो तुम आत्माओं रूपी बच्चों का बड़ा भाई माने दादा है। दादा कहते हैं ना! कहते हैं ना- अरे

ज़्यादा दादागिरी दिखाता है। तो ऐसे कौन बोलते हैं, डिसरिगार्ड करने वाले बोलते हैं या वो बोलते हैं, (जो मानते हैं-) बड़ा भाई बाप समान होता है? कौन बोलता है? डिसरिगार्ड करने वाले बोलते हैं। अगर पहचान लें कि बाप तो हमेशा नहीं रहता है; रहता है? चला जाता है। फिर घर-परिवार का संभालने वाला मुखिया कौन? बड़ा भाई। तो वो बाप समान कहा जाता है। ऐसे ही जो बड़ी बहन होती है, उसको क्या कहते हैं? माँ समान। बड़ी बहन को माता समान, बड़े भाई को बाप समान। तो ऐसे है कि जॉग्राफी भी पढ़ाते हैं। क्या जॉग्राफी पढ़ाते हैं? कि सृष्टि के एकदम आदिकाल में ये सृष्टि कितनी थी, कैसी थी, कहाँ-2 कैसा विस्तार था। हाँ, फिर सतयुग में कितना विस्तार होता है, त्रेता में कितना विस्तार होता है, द्वापर में कितना विस्तार होता है और कलियुग में कितना विस्तार होता है। तो स्कूल में हिस्ट्री-जॉग्राफी पढ़ाते हैं ना! तो देखो, गुरु भी बन गया। गुरु माने भारी। किससे भारी? जितने भी पढ़ाई पढ़ने वाले बच्चे हैं, उनके बीच में ज्ञान में सबसे जास्ती वजन वाला। और टीचर भी बन गया। टीचर में, गुरु में क्या फर्क है? टीचर सिर्फ नॉलेज देता है, पढ़ाई पढ़ाता है। और गुरु? गुरु प्रैक्टिकल में भी करके दिखाएगा या नहीं कराएगा? हाँ, वो तो हर प्रकार से, गुरु उसको कहा जाता है जो सद्गति करे और सद्गति अलग बात और गति अलग बात। गति कहते हैं- चाल। कहते हैं- भई, तुम्हारी चाल/स्पीड कितनी है? तो कहेंगे- हमारी स्पीड जो है, एक घंटे में 5 किलोमीटर चल सकते हैं। तो ये स्पीड/गति हुई। तो आत्मा की गति है, बहुत तीव्र गति होती है तो कहेंगे- बड़ी तीव्र गति। तो तीव्र गति किसकी कहेंगे- आत्माओं की कहेंगे या सुप्रीम सोल की कहेंगे? (किसी ने इशारा किया) आत्माओं के बाप की कहेंगे! हाँ, जो जितना ज़्यादा सूक्ष्म होता है उसकी उतनी ही तीव्र गति होती है। तो सबसे जास्ती सूक्ष्म-ते-सूक्ष्म सुप्रीम सोल शिव है। वो बहुत ही गतिवान। कितना गतिवान? एक सेकेण्ड में परमधाम की स्टेज से साकारी तन में आ करके साकारी पार्ट बजाय लेता है। तो देखो, वो टीचर तो है सुप्रीम टीचर और सुप्रीम गुरु भी है या नहीं है? सुप्रीम गुरु साकार होता है या निराकार होता है? साकार भी होता है। तो वो निराकार साकार भी बनता है सुप्रीम टीचर और सुप्रीम गुरु भी है और सुप्रीम बाप भी है। एक ही शरीर में मुकर्रर रथ में बाप भी है, टीचर भी है और सद्गुरु भी है। [''यह मूर्ति एक ही है; परंतु हैं तीनों ही अर्थात् बाप भी बनते हैं, टीचर भी बनते हैं, गुरू भी बनते हैं।'' (मु.ता.10.7.99 पृ.1 आदि)] समझा ना बच्चे! तो देखो, अगर ऐसे बाप, ऐसे टीचर, ऐसे गुरु जो ऊँच-ते-ऊँच है और क्लास में इरेग्युलर हुए या पंक्चुअल नहीं हुए, देर से आए तो डिसरिगार्ड किया ना! तो एक का डिसरिगार्ड करें तो कम हुआ और तीन का डिसरिगार्ड करें तब तो बड़ा भारी डिसरिगार्ड हो गया! तो बच्चों ने ये समझा अच्छी तरह से? हाँ, ओम् शान्ति।